

पं० क्षितीश वेदालंकार द्वारा रचित एवं सम्पादित कृतियां

मौलिक मनस्वी माननीय पण्डित जी की स्मृति आते ही सर्वाधिक सार्थक और प्रभावशाली भावों का सम्बन्ध उनके चिन्तन के विविध आयामों से होता है। दो दर्जन के लगभग प्रकाशित और एक दर्जन भर अप्रकाशित उनकी पुस्तकों में उनके सुलझे हुए विचारों की पावन स्रोतस्विनी बह रही है। उनके द्वारा रचित और सम्पादित कृतियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. आर्य-सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति

(सन् १९३६, प्रकाशक — गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

इस पुस्तक में गुरुकुल से हैदराबाद सत्याग्रह में जाने वाले पहले जत्थे का वर्णन है, जिसका नेतृत्व स्वयं क्षितीश जी ने किया था। सत्याग्रह में सम्मिलित होने वाले अन्य स्नातकों का भी परिचय इस पुस्तक में दिया गया था।

२. जातिभेद का अभिशाप

(सन् १९३६, प्रकाशक — आर्यकुमार सभा, मुरादाबाद)

इस पुस्तक में ऐतिहासिक उदाहरणों के माध्यम से जातिभेद के कारण देश को होने वाली हानियों का दिग्दर्शन है। यह पुस्तक आर्यकुमार सभा की परीक्षा में नियत की गई थी।

३. आर्य-समाज की विचारधारा

(सन् १९३६, प्रकाशक — आर्योदय, पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

इस लघु-पुस्तिका में आर्य-समाज की धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व राजनीतिक मान्यताओं का संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

४. जल-बिन्दु

(सन् १९३६, प्रकाशक—साहित्य मन्दिर, ४/१६ रूपनगर, दिल्ली)

गुजराती के विख्यात यशस्वी साहित्यकार श्री गोवर्धनराम जोशी की इसी नाम वाली रचना का हिन्दी में अनुवाद।

५. स्वेतलाना (सन् १९३६, प्रकाशक—सुबोध पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली)

क्रेमलिन की राजकुमारी व स्टालिन की पुत्री स्वेतलाना के जीवन पर लिखा गया यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि एक ही महीने में इसका दूसरा परिवर्धित संस्करण दुगुने मूल्य पर निकाला गया। इसमें लेखक की भावुक और अन्तर्दृष्टि से सम्पन्न साहित्य-सृजन-क्षमता के दर्शन होते हैं, जो इनके गहरे देश-प्रेम का भी परिचायक है। इस पुस्तक का गुजराती और मराठी में अनुवाद होना इसकी लोकप्रियता का एक और प्रमाण है।

६. सातवलेकर अभिनन्दन ग्रन्थ

(सन् १९६८, प्रकाशक—सातवलेकर अभिनन्दन समिति, नई दिल्ली)

वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् वेदमूर्ति पं० दामोदर सातवलेकर के दिल्ली में सार्वजनिक अभिनन्दन के अवसर पर यह ग्रन्थ तैयार किया गया जिसका पूरा भार क्षितीश जी को सौंपा गया, क्योंकि अभिनन्दन समिति को उनसे बढ़कर वेदों का विद्वान् अन्य कोई पत्रकार दिखाई नहीं दिया। क्षितीश जी ने इसे गुरुपूजा का अवसर मानकर इस कार्य को सहर्ष स्वीकार किया और अभिनन्दन समिति की ओर से बहुत आग्रह किए जाने पर भी पारिश्रमिक का एक पैसा नहीं लिया। इस ग्रन्थ में सातवलेकर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ उनके क्रान्तिकारी वैदिक चिन्तन का सुन्दर प्रस्तुतिकरण हुआ है।

७. श्री कृष्ण सन्देश

(सन् १९६६, प्रकाशक—श्री कृष्ण जन्म स्थान सेवासंघ, मथुरा)

भारत, भारतीय संस्कृति और हिन्दुत्व के निष्ठावान् उपासक श्री जुगल किशोर बिरला की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी स्मृति में प्रकाशित इस विशेषांक का सम्पादन जिस कुशलता के साथ क्षितीश जी ने किया, उसे सभी ने सराहा।

८. गांधी जी के हास्य-विनोद

(सन् १९६८, प्रकाशक—सुबोध पॉकेट बुक्स)

गांधी जी की जन्मशती पर उनके एक सौ विनोद-प्रसंगों का यह विशिष्ट प्रकाशन राष्ट्रपिता के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप प्रस्तुत किया गया था। उसकी भूमिका काका कालेलकर ने लिखी थी।

६. मारीशस-स्मारिका

(सन् १९७३, प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-२१)

सन् १९७३ में सार्वदेशिक आर्य-महासम्मेलन मॉरीशस में सम्पन्न हुआ था। इस स्मारिका में उस सम्मेलन का पूर्ण विवरण, मॉरीशस का संक्षिप्त इतिहास, सम्मेलन में सम्मिलित अधिकांश आर्यों के चित्र, जलपोत के ६३५ भारतीय यात्रियों की सूची, विविध सम्मेलनों के अध्यक्षों के भाषण तथा कुछ अन्य उपयोगी सामग्री संकलित है। इस स्मारिका ने भारत और मॉरीशस के सम्बन्धों को दृढ़ और स्थायी बनाने में अच्छी भूमिका निभाई।

१०. बांग्लादेश : स्वतंत्रता के बाद

(सन् १९७३, प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली)

उपन्यास से भी अधिक रोचक यह कृति उस वर्ष हिन्दी में सर्वोत्तम यात्रा-वृत्तान्त के रूप में समादृत हुई और हरियाणा सरकार की ओर से पुरस्कृत हुई। यह कृति लेखक की साहसिक यायावरी और वर्णन-वैदग्ध्य की परिचायक है।

११. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में

(सन् १९७६, प्रकाशक—ज्ज्ञान प्रकाशन, करोलबाग, नई दिल्ली)

यह पुस्तक अंग्रेजी की The evidence of God in expanding universe (लेखक — जानक्लोवर मोन्स्मा) नामक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसमें विज्ञान की विविध शाखाओं के संसार-प्रसिद्ध पाश्चात्य वैज्ञानिकों के ईश्वर सम्बन्धी विचार संकलित किए गए हैं। वैज्ञानिक ईश्वर को नहीं मानते — इस भ्रम का निवारण इस पुस्तक में किया गया है।

१२. दयानन्द दिव्य दर्शन

(सन् १९७६, प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
रामलीला मैदान, दिल्ली)

इस पुस्तक के बहुरंगी चित्र कलकत्ता के प्रसिद्ध कलाकार श्री चारुचन्द के बनाए हुए हैं और आलेख क्षितीश जी द्वारा लिखा गया है। पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें ऋषि के जन्म से लेकर देहावसान पर्यन्त जीवनी का प्रांजल शैली में ऐसे ढंग से वर्णन किया गया है कि जीवनी का क्रम भी नहीं टूटता और चित्र का परिचय अलग से न दिए जाने पर भी उस वर्णन में स्वयं मुखर हो उठता है। प्रत्येक घटना को चित्र से बाकी बची जगह में समेटने के लिए

शब्दों को गिन-गिनकर लिखने में लेखक की परीक्षा थी। तत्कालीन वित्तमंत्री चौधरी चरण सिंह ने इस पुस्तक का विमोचन किया और लेखक को सम्मानित किया।

बाद में इसी पुस्तक के आलेख को 'दिव्य-दयानन्द' के नाम से अलग पुस्तक का रूप देकर आर्य प्रकाशन, अजमेरी गेट, दिल्ली ने प्रकाशित किया।

१३. ओ मेरे राजहंस!

(सन् १९७८, प्रकाशक - कला प्रकाशन, दिल्ली)

इस पुस्तक में क्षितीश जी द्वारा आपातकाल के दौरान लिखे गए दैनिक 'हिन्दुस्तान' के ४० अग्रलेख संकलित हैं। आपातकाल के दिनों में लिखे गए लेखों की साहित्यिक व व्यंग्यात्मक ढंग से की गई आलोचना-समीक्षा मन मोहती है।

१४. फिर इस अन्दाज़ से बहार आई

(सन् १९७८, प्रकाशक - आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली)

दैनिक 'हिन्दुस्तान' में रविवार के दिन जो साहित्यिक रम्य अग्रलेख क्षितीश जी द्वारा लिखे गए, इस पुस्तक में उनका संकलन है। इन साहित्यिक अग्रलेखों की उद्धरणों का बाहुल्य होने के कारण, अन्य लेखों से भिन्न शैली थी।

१५. देवता कुर्सी के

(सन् १९७८, प्रकाशक - अलंकार प्रकाशन, गांधीनगर, दिल्ली)

यह पुस्तक पण्डित जी के ललित अग्रलेखों का तीसरा संकलन है। पण्डित जी के अग्रलेखों का पुस्तकाकार छपना इनकी लोकप्रियता का प्रमाण है।

१६. सत्यार्थ-प्रकाश शताब्दी स्मारिका

(सन् १९७९, प्रकाशक - आर्य प्रादेशिक उपसभा, हरियाणा)

पानीपत में हुए सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह के अवसर पर निकली स्मारिका, जिसमें सत्यार्थ प्रकाश के सभी समुल्लासों के प्रमुख विषयों के सम्बन्ध में तथा अन्य अनेक दृष्टियों से सत्यार्थ प्रकाश का महत्त्व प्रतिपादित करने वाले लेख संकलित हैं। तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने, जो स्वयं दृढ़ आर्य-समाजी थे, इस समारोह का उद्घाटन करते हुए स्मारिका का विमोचन किया।

१७. लन्दन स्मारिका

(सन् १९८०, प्रकाशक — आर्य समाज लन्दन, इंग्लैण्ड)

यह स्मारिका लन्दन में हुए सार्वभौम आर्य महासम्मेलन (२३ से २५ अगस्त, १९८०) के अवसर पर प्रकाशित हुई। स्मारिका में अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों में ऋषि दयानन्द और आर्य-समाज के सम्बन्ध में उत्कृष्ट और प्रामाणिक सामग्री है। स्मारिका तीन खण्डों में विभाजित है— (१) पहले और बाद में; (२) उनकी दृष्टि में; (३) उपलब्धि और सम्भावनाएं। साज-सज्जा, भारतीय संस्कृति के परिचायक लघु चित्रांकन और सारगर्भित सामग्री की दृष्टि से यह स्मारिका बेजोड़ थी।

१८. भारत को हिन्दू (आर्य) राज्य घोषित करो

(सन् १९८१, प्रकाशक — आर्य प्रादेशिक सभा, दिल्ली)

यह विराट हिन्दू मंच की स्थापना के अवसर पर 'आर्य जगत्' का यह विशेषांक पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक में हिन्दू और हिन्दुत्व के राष्ट्रीय स्वरूप पर देश के प्रमुख बुद्धिजीवियों के लेख संकलित हैं।

१९. निज़ाम की जेल में

(सन् १९८६, प्रकाशक — दि वर्ड पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली)

सन् १९३६ में हैदराबाद-निज़ाम की रियासत में आर्य समाज की ओर से सत्याग्रह क्यों किया गया और किस प्रकार वहां हिन्दुओं के धार्मिक और नागरिक मानवाधिकारों का हनन हो रहा था— इसका पूरा ऐतिहासिक और प्रामाणिक विवेचन रियासत के रिकार्डों के दस्तावेजों के आधार पर इस पुस्तक में किया गया है। निज़ाम की जेलों में हो रहे अमानवीय अत्याचारों का और हैदराबाद-सत्याग्रह के पहले जत्थे की आप बीती का व निज़ाम-रियासत के भारत में विलय में आर्यवीरों की भूमिका का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

२०. तूफान के दौर से पंजाब

(सन् १९८४, प्रकाशक — दि वर्ड पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली)

पंजाब की समस्या और खालिस्तान की असलियत के बारे में ऐतिहासिक आधार पर इतनी खोज अन्य किसी पुस्तक में नहीं है। पुस्तक के अन्तिम आवरण-पृष्ठ पर दिए गए 'क्या आप विश्वास करेंगे' शीर्षक के नीचे कुछ ऐसे ऐतिहासिक तथ्य हैं जिनसे कोई भी पाठक चौंक सकता है। इस पुस्तक की अत्यधिक लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि इसका प्रथम संस्करण छपाई के

उपरान्त केवल तीन मास में समाप्त हो गया। पुस्तक का दूसरा परिवर्धित संस्करण उसी वर्ष छपा और वह भी समाप्त हो गया। पुस्तक का तीसरा संस्करण सन् १९८५ में छपा। जनता के अनेकानेक आग्रह पर और विदेशों से आई मांग के कारण सन् १९८५ में पुस्तक का अंग्रेजी में अनूदित संस्करण 'Storm in Punjab' भी छपा।

२१. डी. ए. वी. शताब्दी स्मारिका

(सन् १९८७, प्रकाशक — डी.ए.वी. शताब्दी स्मारिका समिति, नई दिल्ली)

चार सौ पृष्ठों की यह भारी भरकम स्मारिका डी.ए.वी. आन्दोलन के सौ वर्ष पूरे होने पर प्रकाशित हुई। स्मारिका में डी.ए.वी. आन्दोलन के पूरे इतिहास का संक्षेप में वर्णन है व शिक्षा-सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं पर देश के प्रमुख शिक्षा-शास्त्रियों के अंग्रेजी और हिन्दी में लेख हैं। इस स्मारिका को तैयार करने में पत्रकारिता-सम्बन्धी कौशल और परिश्रम का जैसा तालमेल था, उससे प्रसन्न होकर डी.ए.वी. शताब्दी स्मारिका समिति ने पण्डित जी को दस हजार रुपये का पुरस्कार दिया, जो तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

२२. हिन्द की चादर में दाग

(सन् १९८८, प्रकाशक — स्वामी सत्यप्रकाश स्मृति प्रतिष्ठान, बरेली)

यह पुस्तक 'आर्य-जगत्' के सन् १९८४ के अग्रलेखों का संकलन है जो जनता के आग्रह पर तैयार किया गया।

२३. राष्ट्रीय एकता की बुनियादें

(सन् १९९०, प्रकाशक — स्वामी सत्यप्रकाश स्मृति प्रतिष्ठान, बरेली)

यह पण्डित जी के अग्रलेखों का पंचम संकलन है जिसमें आर्य-जगत् के सन् १९८५ के ४१ सम्पादकीय-लेख हैं।

२४. कश्मीर : झुलसता स्वर्ग

(सन् १९९०, प्रकाशक — दि वर्ड पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली)

पिछले ५००० वर्षों से कश्मीर हिन्दुओं का गढ़ रहा है और वहां के चप्पे-चप्पे पर हिन्दुत्व की गहरी छाप है। इस पुस्तक में कश्मीर से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों के साथ-साथ स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद कश्मीर में हुई महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं का वर्णन है। स्वतंत्रता के बाद कश्मीर का भारत में विलय, पाकिस्तान द्वारा भेजे गए कबायलियों द्वारा कश्मीर में मचाई गई लूट-पाट और पिछली दशाब्दी

में पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में फैलाए गए आतंकवाद और दहशत का मार्मिक वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

२५. चयनिका

(सन् १९६१, प्रकाशक — गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली)

इस पुस्तक में पण्डित जी द्वारा चुने गए उनके ऋषि दयानन्द, आर्य समाज, वैदिक धर्म, समाज सुधार, शिक्षा और भाषा-सम्बन्धी लेखों का संकलन है।

२६. असलियत क्या है

(सन् १९६२, प्रकाशक — स्वामी सत्यानन्द स्मारक ट्रस्ट,
हिण्डौन सिटी, राजस्थान)

पण्डित जी के जीवन-काल में छपी अन्तिम पुस्तक जिसमें उनके सन् १९८६ के अग्रलेखों का संकलन है।

उक्त पुस्तकों एवं स्मारिकाओं के अलावा पण्डित जी का अभिनन्दन ग्रन्थ 'राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा' सन् १९८६ में वीरेन्द्र कुमार आर्य द्वारा सम्पादित, नया युग पुरुष, अजमेर द्वारा प्रकाशित किया गया। पण्डित जी के ७४वें जन्म-दिवस के अवसर पर छपी यह पुस्तक उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचयात्मक प्रस्तुतीकरण है। इस पुस्तक में पण्डित जी के सम्पर्क में आए सुविख्यात आर्य-पुरुषों व विभिन्न समाचार-पत्रों में उनके साथ कार्यरत पत्रकारों और साहित्यकारों के लेखों का संकलन है जिनमें उन्होंने पण्डित जी के साथ बिताए हुए समय की विभिन्न घटनाओं, उनकी कार्य-शैली और उनकी प्रतिभा के विविध आयामों का वर्णन किया है। इनके साथ पुस्तक में पण्डित जी के अपने पत्रकार जीवन के और यायावरी के रोचक संस्मरण भी हैं।